संतों की वाणी

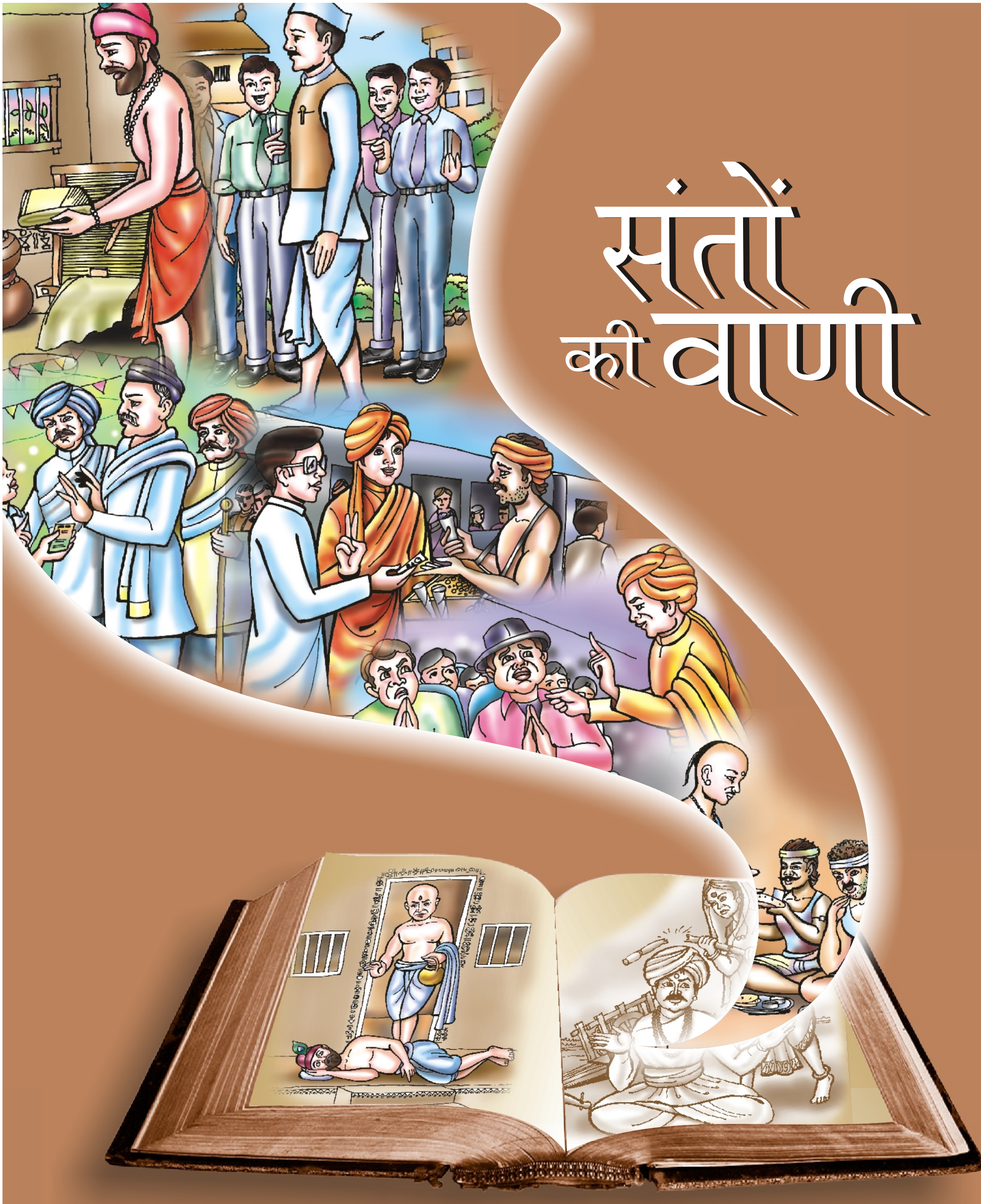

राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा, इंदौर, म.प्र.

संतों की वाणी

कोड नं.	:	001 (II)
लेखक	:	भारती पंडित
संपादन	:	तारा जायसवाल नियति सप्रे
चित्रांकन	:	सुमंत गोले
संस्करण	:	द्वितीय, फरवरी 2009
प्रतियाँ	:	1500
मूल्य	:	15.00 रुपये

© प्रकाशकाधीन

प्रकाशक : राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा
भारतीय ग्रामीण महिला संघ
महालक्ष्मीनगर, सेक्टर आर, इंदौर-452010, म.प्र.
फोन- 2551917, 2574104 फैक्स- 0731-2551573
e-mail: srcmpindore@gmail.com
literacy@sify.com
Web: www.srcindore.org

मुद्रक : सिद्धार्थ ऑफसेट

आमुख

कथाओं का जीवन में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। इनमें लोक जीवन की सजीव व मनोरंजक झाँकी मिलती है। ये नीति और मर्यादाओं पर आधारित होती हैं। इनमें जीवन का सार छुपा हुआ है। बड़े मनोरंजक ढंग से ये कथाएँ मानव का पथ प्रदर्शन करती हैं।

'**संतों की वाणी**' पुस्तिका में नैतिक मूल्यों पर आधारित कथाएँ दी गई हैं। ये नवसाक्षरों का मनोरंजन करेंगी, साथ ही उनमें छुपे हुए गूढ़ नैतिक मूल्य उन्हें अपनी जिम्मेदारियों का भी अहसास कराएँगे। इस पुस्तिका में दी गई कथाओं की प्रस्तुति **श्रीमती भारती पंडित** द्वारा बड़े ही रोचक ढंग से की गई है। पुस्तिका के लिए आकर्षक चित्रांकन **श्री सुमंत गोले** द्वारा किया गया है। केन्द्र इनके प्रति आभार व्यक्त करता है।

आशा है कि यह पुस्तिका नवसाक्षरों को अवश्य ही पसंद आएगी। पुस्तिका के संबंध में आपके सुझावों का सदैव ही स्वागत रहेगा।

कुन्दा सुपेकर
निदेशक
राज्य संसाधन केन्द्र,
प्रौढ़ शिक्षा, इंदौर, म.प्र.

संत कबीर

कबीर एक महान संत थे। साधना की शुरूआत में उन्हें गुरु की आवश्यकता थी। कबीर रामानंदजी को अपना गुरु बनाना चाहते थे। मगर वे हिन्दू थे व कबीर मुस्लिम। कबीर ने उनसे मिलने की बहुत कोशिश की। धर्म की दीवार हमेशा बाधा बन गई। लेकिन कबीर ने रास्ता खोज लिया।

गुरु रामानंद रोज सवेरे गंगास्नान के लिए जाते थे। एक रात कबीर उनकी झोपड़ी के बाहर दरवाजे में लेट गए। रामानंद जी सुबह उठते ही गंगास्नान को निकले। उनका पाँव कबीर के शरीर पर पड़ा। उनके मुख से निकला 'राम-राम'। कबीर तो खुशी से पागल हो गए। गुरु की चरण धूलि भी मिल गई थी और गुरु मंत्र भी। उसके बाद कबीर ने 'राम-राम' का जाप करना शुरू कर दिया।

कबीर खुद को रामानंद जी का शिष्य कहने लगे। वे 'राम-राम' जपने लगे। लोगों ने रामानंदजी से पूछा कि एक मुस्लिम को आपने शिष्य कैसे बनाया? यह सुनकर रामानंदजी हैरान हुए। उन्होंने भरी सभा में कबीर को बुलवाया और पूछा- 'वह उनका शिष्य कब बना?'

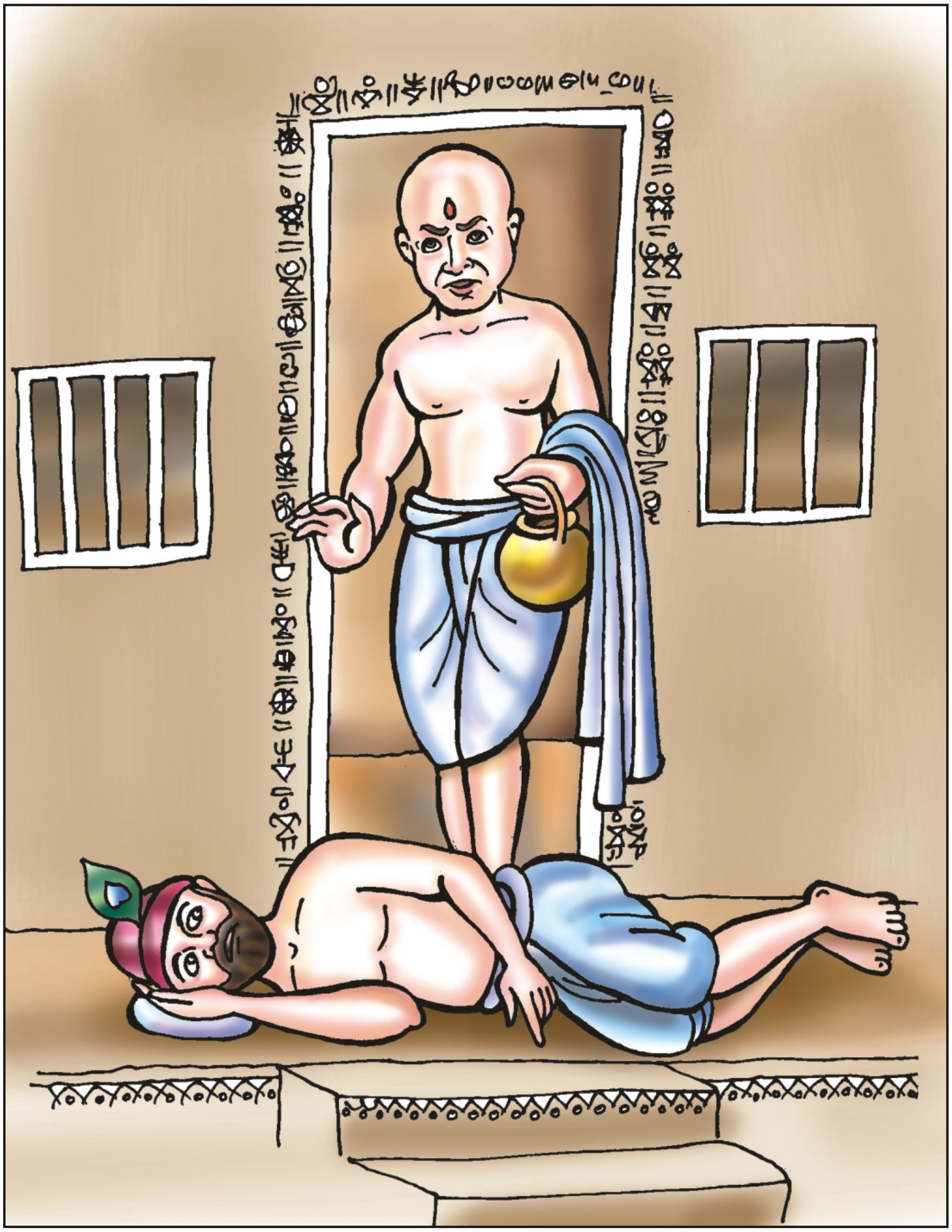

कबीर ने उस दिन की घटना बताई। रामानंद जी गुस्सा होकर बोले– 'यह तो सरासर धोखा है। 'राम–राम' कहकर उन्होंने अपनी खड़ाऊ कबीर के ऊपर फैंक दी।'

कबीर ने उन्हें प्रणाम कर कहा– 'उस दिन न सही, आज तो आपने मुझे शिष्य मान ही लिया है। मुझे फिर से यह चरण धूलि और 'राम–राम' का मंत्र दिया है।' रामानंदजी जान गए कि कबीर साधारण व्यक्ति नहीं हैं। उन्होंने कबीर को गले से लगा लिया। रामानंदजी ने कबीर को अपना सबसे अच्छा शिष्य माना।

संत कबीर जुलाहे का काम करते थे। वे गरीब थे। परन्तु वे गरीबों की सेवा का एक भी मौका नहीं चूकते थे। वे मानते थे कि अपने काम से प्रेम करना ही ईश्वर की सच्ची पूजा है।

एक बार वे कपड़ा बुन रहे थे। एक दुखी भिखारी उनके पास आया। उसने तन ढँकने के लिए कपड़ा माँगा। कबीर ने अपने बुने हुए कपड़े का आधा थान उसे दे दिया। यह देखकर दो–तीन भिखारी और आ गए। कबीर ने बचा हुआ थान उनमें बाँट दिया। कपड़ा न बेच पाने के कारण उनके परिवार को दो दिन तक भूखा रहना पड़ा। परन्तु कबीर के माथे पर कोई शिकन न आई।

सादा जीवन, उच्च विचार

भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्रप्रसाद थे। वे सरल स्वभाव के, अनुशासन प्रिय और कम बोलने वाले थे। उनमें आत्मविश्वास, ईमानदारी और सच्चाई जैसे गुण थे। वे पढ़ने में होशियार थे। उनका मानना था कि विद्यार्थी को मन लगाकर पढ़ना चाहिए। इससे उनकी नींव मजबूत होती है।

एक बार राजेंद्रप्रसाद को मलेरिया हो गया। सभी ने उन्हें परीक्षा न देने की सलाह दी। मगर उन्हें अपने आप पर पूरा भरोसा था। वे बोले– 'मैंने सालभर जो भी पढ़ा है, उसी के सहारे परीक्षा दूंगा। प्रथम भी आऊँगा।'

उन्होंने परीक्षा दी और सारे पर्चे अच्छी तरह से दिए। जब परीक्षाफल आया तो उसमें राजेंद्रप्रसाद का नाम नहीं था। राजेंद्रप्रसाद विश्वास से बोले– 'मैंने मेहनत की है, मैं कभी असफल नहीं हो सकता।'

उनके शिक्षक ने उन्हें डाँटा और चुप बैठने को कहा। मगर वे न माने। शिक्षक ने उन पर पाँच रुपए जुर्माना किया। राजेंद्रप्रसाद अपनी बात पर अड़े रहे। जुर्माना बढ़ते–बढ़ते पचास रुपए तक पहुँच गया। विद्यालय में हलचल मच गई। बात प्राचार्य तक पहुँची। तब पता चला कि भूलवश उत्तीर्ण छात्रों की सूची में उनका नाम छपने

से रह गया था। वे न केवल उत्तीर्ण हुए बल्कि कक्षा में प्रथम भी आए। ऐसा था उनका आत्मविश्वास।

वे भारतीय वेशभूषा का आदर करते थे। जब उन्होंने प्रेसीडेंसी कॉलेज में दाखिला लिया। वे वहाँ धोती-कुर्ता पहनकर गए। यह देखकर सारे छात्रों ने उनका मजाक उड़ाया। जब यह मालूम पड़ा कि ये राजेंद्रप्रसाद हैं तो सबके चेहरे उतर गए। जिसको वे लड़के गँवार समझ रहे थे वे कॉलेज में प्रथम आए। इसके बाद किसी ने उनकी सादगी और वेशभूषा का मजाक नहीं उड़ाया। डॉ. राजेंद्रप्रसाद आगे जाकर भारत के पहले राष्ट्रपति बनें।

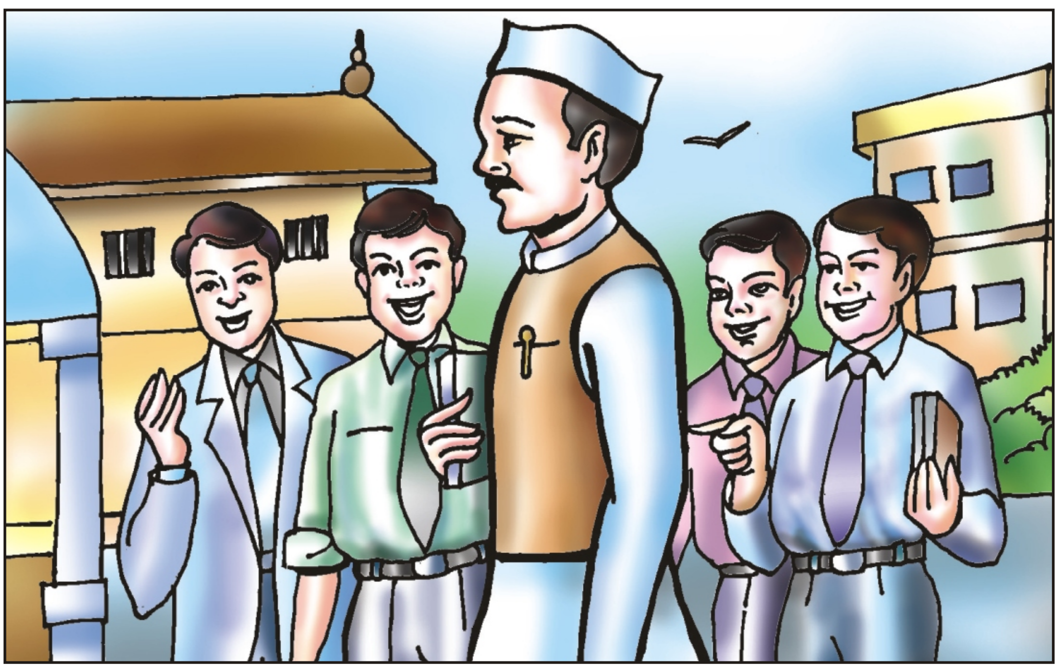

विवेकानंद की उदारता

स्वामी विवेकानंद बचपन से ही बहुत होशियार थे। शारीरिक शिक्षा और खेलकूद में भी उनकी रूचि थी। वे सदैव 'सत्य' बात पर डटे रहते थे। एक बार भूगोल की कक्षा में उनके शिक्षक ने उनसे एक प्रश्न पूछा। विवेकानंद ने प्रश्न का उत्तर सही दिया। इसके बावजूद शिक्षक ने उनके उत्तर को गलत कहकर उन्हें सजा दी।

विवेकानंद ने घर आकर माँ को सारा हाल सुनाया। माँ ने कहा– 'बेटा, यदि तुम सही हो तो सत्य पर डटे रहो।' दूसरे दिन विवेकानंद जी ने शिक्षक से बात की। शिक्षक ने अपनी गलती मान ली।

स्वामी विवेकानंद को पुस्तकें पढ़ने का बेहद शौक था। उनकी पढ़ने की गति बेहद तेज थी। उनके साथी पुस्तकालय से उनके लिए मोटी–मोटी किताबें लाते थे। विवेकानंदजी उन्हें एक ही दिन में पढ़कर लौटा देते थे। लाइब्रेरियन ने उनके साथियों से पूछा– 'स्वामीजी ये किताबें सचमुच पढ़ते हैं। या पढ़ने का नाटक करते हैं?'

स्वामीजी यह सुनकर खुद पुस्तकालय में गए। उन्होंने लाइब्रेरियन से किसी भी किताब से प्रश्न पूछने को कहा। लाइब्रेरियन के हर प्रश्न का स्वामीजी ने सही उत्तर दिया। लाइब्रेरियन यह देख चकित रह गया। उसने स्वामीजी से क्षमा माँगी।

एक बार स्वामीजी ट्रेन से सफर कर रहे थे। ट्रेन में एक फेरीवाला उबले चने बेच रहा था। उन्होंने अपने साथियों से कहा– 'उबला हुआ चना स्वास्थ्य के लिए अच्छा होता है।' साथी स्वामीजी के स्वभाव बारे में जानते थे। उन्होंने एक पैसे का चना खरीदकर चने वाले को चार पैसे दिए।

स्वामीजी बोले– 'अरे, इतने में उसका घर कैसे चलेगा? उसे दो रुपए दे दो।' फेरीवाले को एक पैसे के चने के बदले दो रुपए दिए गए। ऐसे उदार थे स्वामी विवेकानंद।

विवेकानंदजी मातृभूमि के सच्चे भक्त भी थे। एक बार वे विदेश से भारत आ रहे थे। उनके साथ दो ईसाई धर्म के व्यक्ति भी थे। वे हिन्दू व ईसाई धर्म की तुलना करने लगे। स्वामीजी उनसे हिन्दू धर्म के बारे में तर्क करने लगे। स्वामीजी के तर्क का उनके पास कोई जवाब नहीं था। इसलिए वे भद्दे शब्दों में हिन्दू धर्म की निंदा करने लगे। स्वामीजी बहुत देर तक शांत रहे। अंत में उनसे रहा न गया।

स्वामी जी बोलने वाले की कॉलर पकड़ कर बोले- 'अब अगर मेरे धर्म की निन्दा की, तो जहाज से नीचे फैंक दूँगा।' दोनों व्यक्ति डरकर क्षमा माँगने लगे।

वापस आकर उन्होंने अपने मित्र को यह घटना सुनाई। यह सुनकर मित्र बोला– 'तुम एक सन्यासी हो। सन्यासी को ऐसा व्यवहार शोभा नहीं देता।'

विवेकानंद दृढ़ता से बोले– 'यह धरती और इसकी संस्कृति मेरी मां है। इसका जो भी अपमान करेगा, उसे मैं क्षमा नहीं करुँगा। मैं पहले भारत भूमि का बेटा हूँ, फिर एक सन्यासी।'

खेतड़ी के राजा विवेकानंद जी के परम मित्र थे। उन्होंने स्वामी जी के स्वागत में एक कार्यक्रम रखा। उसमें दरबार की गायिका को नाच–गाने के लिए बुलाया।

'सन्यासी होकर नाच–गाना कैसे देखें' ऐसा सोचकर वे सभा में नहीं गए। गायिका को पता चला। वह दुखी हुई। उसने करुणा भरे स्वर में 'प्रभु मोरे अवगुण चित न धरो' गीत गाना प्रारंभ किया। गीत स्वामीजी के कानों में पड़ा। उनकी चेतना जागी– सन्यासी को मनुष्य–मनुष्य में भेद करना शोभा नहीं देता। वे उसी समय सभा में गए। सभा की समाप्ति के बाद गायिका को 'माता' कहकर सम्मानित किया।

❑

संत तुकाराम

संत तुकाराम महाराष्ट्र के प्रसिद्ध संत और कवि थे। वे विठ्ठल भगवान के परम भक्त थे। स्वभाव से अत्यंत सरल और दयालु थे। किसी की भी तकलीफ उनसे देखी नहीं जाती थी।वे तुरंत उसकी सहायता करने दौड़ पड़ते।उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी। तुकाराम की पत्नी गरीबी से बड़ी परेशान रहती थी। तुकाराम का इतना सरल व दानी होना उसे अच्छा नहीं लगता था। वह उन पर क्रोध करती थी मगर तुकाराम हँसकर सहन कर लेते थे।

एक बार तुकाराम के किसी रिश्तेदार ने उन्हें एक बैलगाड़ी भरकर गन्ने भेजे। गन्नों से भरी बैलगाड़ी लेकर तुकाराम घर आ रहे थे।रास्ते में भिखारियों की भीड़ ने उन्हें घेर लिया। तुकाराम ने थोड़े से गन्ने भिखारियों को बाँट दिए। यह देखकर और भिखारी भी आ गए। तुकाराम ने उन्हें भी गन्ने दे दिए।

सारे भिखारियों के जाने के बाद तुकाराम ने देखा। गाड़ी में सिफ एक गन्ना बचा था।उसे लेकर घर आ गए। पत्नी ने खाली गाड़ी देखकर पूछा– 'गन्ने कहाँ हैं?' तुकाराम ने बचा हुआ एक गन्ना उसके हाथ में रख दिया। फिर सारा किस्सा कह सुनाया। पत्नी ने क्रोधित होकर गन्ने से तुकाराम को पीटना शुरू किया। तुकाराम

शांति से मार खाते रहे। पीटते-पीटते गन्ने के दो टुकड़े हो गए। पत्नी पैर पटककर चली गई। पड़ोसियों ने तुकाराम से पूछा- 'आपने पत्नी का विरोध क्यों नहीं किया? चुपचाप मार क्यों खाते रहे?

तुकाराम हँसकर बोले- 'मैंने अपना कर्तव्य निभाया। फिर पत्नी को उसका कर्तव्य निभाने से क्यों रोकूं? मेरे जैसा पति पाकर हर पत्नी ऐसा ही करेगी। उसने ठीक ही किया।' सच है- ऐसी सरलता संत स्वभाव के व्यक्तियों में ही मिल सकती है।

संत एकनाथ

महाराष्ट्र में एक प्रसिद्ध संत हुए एकनाथ जी। यह घटना उस समय की है जब वे गुरु के पास पढ़ते थे। एक बार गुरु ने उन्हें हिसाब लिखने का काम सौंपा। एकनाथ जी रोज रात को दिनभर के खर्चे का हिसाब लिखते थे।

एक बार आधी रात तक वे जाग रहे थे। गुरु ने कारण पूछा। एकनाथ जी ने बताया कि एक पैसे का हिसाब नहीं मिल रहा है। उस एक पैसे के लिए वे परेशान थे। गुरुजी के लाख मना करने पर भी वे बार-बार हिसाब मिलाते रहे। एक पैसे का हिसाब मिलने पर ही सोए। ऐसी थी उनकी ईमानदारी।

एकनाथ जी मनुष्य मात्र से बहुत प्रेम करते थे। एक बार उनके घर में कुछ चोर घुस गए। एकनाथ जी ने उन्हें देख लिया था। फिर भी वे चुपचाप लेटे रहे। चोर जाने लगे तो एकनाथ जी ने अपनी अंगूठी भी उनके सामने फेंक दी।

चोरों ने चौंककर देखा- सामने एकनाथ जी थे। एकनाथ जी

ने उन्हें खाना खिलाया, पानी पिलाया। चोर उनके व्यवहार से बहुत शर्मिन्दा हुए। उन्होंने कभी भी चोरी न करने की कसम खाई।

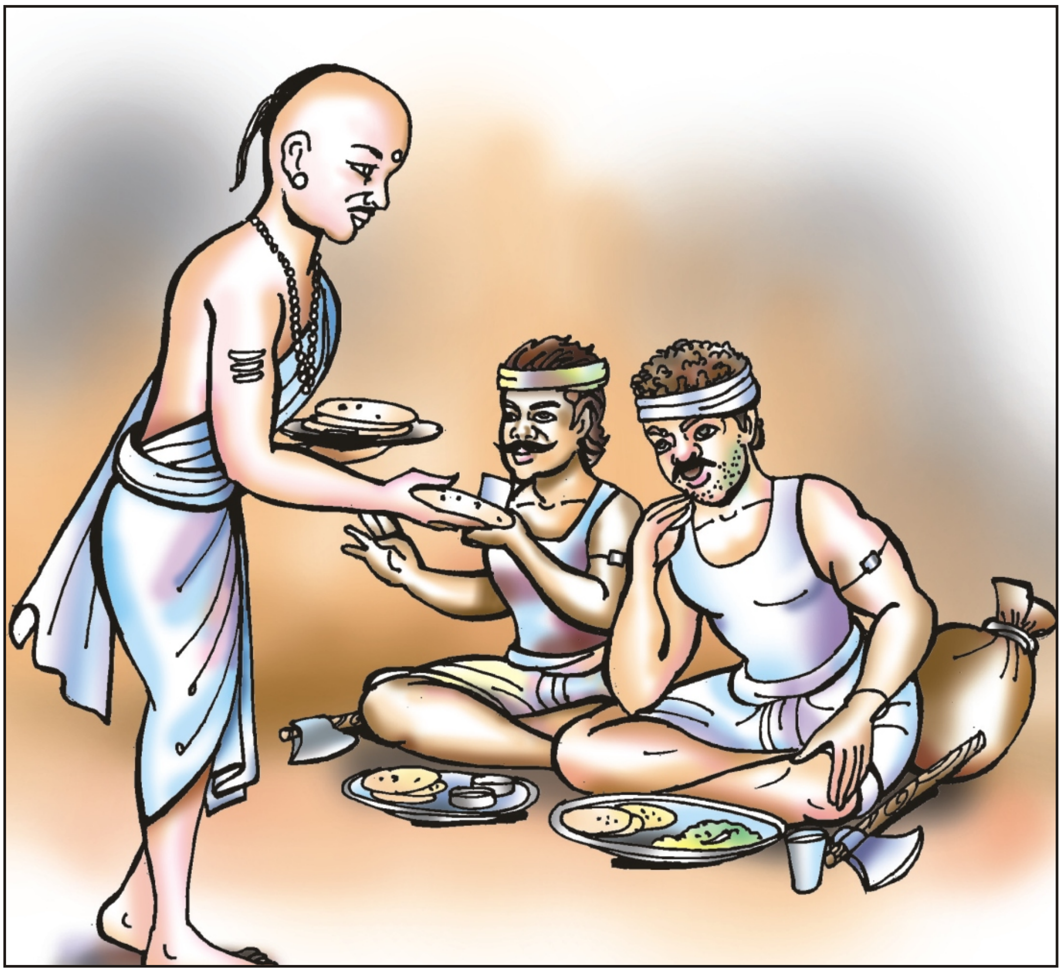

गोपालकृष्ण गोखले

गोपालकृष्ण गोखले को सभी जानते हैं। वे सच्चे अर्थों में ऋषि थे। वे गांधी जी के राजनीतिक गुरु थे। राजनीति के क्षेत्र में वे गांधीजी को उचित मार्गदर्शन देते थे।

उनके विद्यार्थी जीवन की एक घटना है। उनके विद्यालय में वार्षिकोत्सव था। गोपाल को मुख्य द्वार पर खड़ा होना था। उनका काम निमंत्रण पत्र जाँचकर ही हर व्यक्ति को अंदर आने देना था। बालक गोपाल अपना कार्य कर रहे थे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महादेव गोविंद रानडे जी वहाँ आए। गोपाल ने उनसे निमंत्रण पत्र माँगा। साथ खड़े व्यक्तियों ने बताया कि वे तो मुख्य अतिथि हैं। उन्हें निमंत्रण पत्र की क्या आवश्यकता? मगर गोपाल अड़ गए। बिना निमंत्रण पत्र देखे उन्हें अंदर जाने देने को तैयार नहीं हुए। उनका स्पष्ट उत्तर था– 'नियम सभी के लिए समान होना चाहिए।'

उनके शिक्षक उन पर नाराज होने लगे। रानडे जी ने बालक गोपाल के आत्मविश्वास व दृढ़ निश्चय की तारीफ की। वे बोले– 'यह बालक बहुत आगे जाएगा।' शिक्षकों ने निमंत्रण पत्र की व्यवस्था की, तब रानडे जी कार्यक्रम स्थल पर जा सके।

गोपालकृष्ण गोखले मातृभूमि के सच्चे सेवक थे। वे स्वयं

तपस्वी जीवन बिताते थे। पर हमेशा दूसरों की भलाई करने में लगे रहते थे। उन्होंने देश के कल्याण के लिए बहुत सारा धन इकट्ठा किया। मगर खुद ने जीवन भर 24 रुपए मासिक पेंशन पर गुजारा किया। जीवन भर सादगी से रहे। वे आजीवन देश की सेवा और विकास में लगे रहे। ❑

लाला लाजपत राय

लाला लाजपतराय स्वाभिमानी व्यक्ति थे। उनका जन्म गरीब परिवार में हुआ था। बचपन से ही लाला लाजपतराय के मन में देश प्रेम और जनसेवा की भावना कूट-कूटकर भरी हुई थी। वे बड़े होकर वकील बनना चाहते थे।

लालाजी बचपन से ही पढ़ने में बहुत होशियार थे। छठी कक्षा के बाद की पढ़ाई के लिए वे लाहौर गए। गरीबी के कारण उन्हें सूखी रोटी और दो जोड़ मोटे कपड़ों में रहना पड़ता था। उन्होंने पैसा कमाने के लिए पढ़ाई में कमजोर बच्चों को पढ़ाना शुरू किया। कड़ी मेहनत करके उन्होंने छात्रवृत्ति परीक्षा पास की। इससे उनकी फीस का प्रबंध हो सका।

एक बार लालाजी बहुत बीमार हो गए। उस समय भी उन्होंने अपनी पढ़ाई में कमी नहीं की। जब वे बार-बार बीमार होने लगे तब उन्होंने अपने खान-पान को सुधारा। इसके बाद वे कभी भी बीमार नहीं पड़े।

कॉलेज की डिग्री के बाद उन्होंने लॉ कॉलेज में प्रवेश लिया। छह रुपए मासिक की छात्रवृत्ति में दो रुपए कॉलेज की फीस देते। तीन रुपए वकालत का शुल्क देते। बचे एक रुपए में पूरे महीने का खर्च निकालते। ऐसी तकलीफ सहकर उन्होंने वकालत पास की।

वकालत की पढ़ाई पूर्ण करने के बाद लालाजी जनसेवा का काम करने लगे। अकाल पीड़ितों की सेवा की, भूकंप पीड़ितों की सहायता की। समाज सेवा में लालाजी हमेशा आगे रहे। पद और अवसर होने पर भी उन्होंने उसका गलत फायदा नहीं उठाया। आजादी की लड़ाई में वे गांधीजी के साथ थे।

'साइमन कमीशन' के विरोध में निकाले गए जुलूस में वे सबसे आगे थे। अपने ऊपर लाठियों का वार सहकर भी वे लोगों को शांति का संदेश देते रहे। लाठियों की मार सहते-सहते लालाजी की मृत्यु हो गई। इस तरह देश की आजादी के लिए उन्होंने अपने प्राण निछावर कर दिए। लालाजी को 'पंजाब केसरी' की उपाधि दी गई।

❑

हमारे प्रकाशन

◆ कर का डर	12.00
◆ विनम्रता	9.00
◆ जीवन का मोल	10.00
◆ कायाकल्प	11.00
◆ अकेली	10.00
◆ मजबूरी	10.00
◆ पूतों वाली	9.50
◆ तीसरा बेटा	8.00
◆ घड़ाभर अकल	9.50
◆ महात्मा गांधी भाग-1	8.00
◆ महात्मा गांधी भाग-2	8.00
◆ सूझबूझ	8.00
◆ कठौती में गंगा	8.00
◆ सच्ची प्रार्थना	8.00
◆ हीरों का हार	8.00
◆ अकल की दुकान	8.00
◆ बूझो तो जाने	8.00
◆ सहोदरा	9.00
◆ सच्ची तीर्थ यात्रा	10.00
◆ चिंगारी	8.00
◆ दो कुओं की कहानी	9.00
◆ कहावतों की कहानियाँ	8.00
◆ किस्से अकबर बीरबल के	10.00
◆ छत्तीसगढ़ की लोककथाएँ-1	9.00
◆ छत्तीसगढ़ की लोककथाएँ-2	9.00
◆ संत कबीरदास व संत सिंगाजी	9.00
◆ संत रविदास	8.00
◆ मीराबाई	8.00
◆ गोस्वामी तुलसीदास	8.00
◆ नया जन्म	8.00
◆ सच्चा न्याय	8.00
◆ सूरदास	9.00
◆ गुरु नानकदेव	10.00
◆ लाले का उस्ताद	8.00
◆ झूठ की सजा	8.00
◆ गौतम बुद्ध	9.00
◆ महावीर स्वामी	9.00
◆ ईसा मसीह	9.00
◆ वाणी का कमाल	8.00
◆ मंगू का सपना	8.00
◆ मानव धर्म	9.00
◆ सुनो कहानी	8.50
◆ सुनहरा नेवला	7.00
◆ गाँव की लड़की	9.00
◆ कैलाश नानी	9.00
◆ जैसी करनी वैसी भरनी	9.00
◆ बीरबल की चतुराई	8.00
◆ कमजोरी का स्वयंवर	9.00
◆ निमाड़ी लोककथाएँ	9.00
◆ नैतिक कथाएँ भाग-1	8.50
◆ नैतिक कथाएँ भाग-2	8.00

प्रकाशक : राज्य संसाधन केन्द्र, प्रौढ़ शिक्षा भारतीय ग्रामीण महिला संघ, इन्दौर, म.प्र.

महालक्ष्मीनगर, सेक्टर आर, इन्दौर- 452010 (म.प्र.)
फोन- 2551917, 2574104 फैक्स- 0731-2551573